त्र्यक्षरी मृत्युञ्जयमन्त्रप्रयोग

त्र्यक्षरी मृत्युञ्जयमन्त्र को लघु मृत्युञ्जयमन्त्र भी कहा जाता है। इसके जप से भी सभी प्रकार की व्याधियों का नाश होता है। यहाँ पर हम संक्षेप में ही इस मन्त्र के जप की विधि का वर्णन करेंगे। विस्तार से जप की प्रक्रिया अपनानेवालों को शिवमन्त्रों के जप से पूर्व होनेवाली सभी क्रियाओं जैसे भूतशुद्धि, अन्तर्मात्रिका एवं बहिर्मात्रिकान्यास, स्व की प्राण प्रतिष्ठा, श्रीकण्ठादि-कलान्यास तथा आवरण-पूजा, आदि-आदि करना पड़ता है। संक्षिप्त विधि में शिव-मन्त्रों के जप-संबंधी उपर्युक्त सामान्य अंगों को छोड़ दिया जाता है, केवल उन्हीं अंगों को लिया जाता है जो मन्त्रविशेष से सीधे संबंध रखते हैं। संपुटित मूलमन्त्र इस प्रकार है-ॐ **जूँ सः सः जूँ** ॐ।

जपकर्ता को चाहिये कि किसी पवित्र स्थान में स्नान, आचमन, प्राणायाम, गुरु एवं गणेश का स्मरण तथा इष्टदेव का पूजन-वंदन करने के बाद तिथि-वार आदि का उच्चारण करते हुए इस प्रकार संकल्प करे-

अमुकोऽहं अमुकवासरादौ स्वस्य(यजमानस्य वा) निखिलारिष्टनिवृत्तये लघु मृत्युञ्जयमन्त्रजपमहं करिष्ये।

तत्पश्चात् हाथ में जल लेकर इस प्रकार विनियोग एवं न्यासादि करना चाहिये-

विनियोग

ॐ अस्य श्रीत्र्यक्षरात्मकमृत्युञ्जयमंत्रस्य कहोलऋषिः। देवी गायत्री छन्दः। श्रीमृत्युञ्जयो महादेवो देवता। जूँ बीजम्। सः शक्तिः। ॐ कीलकं*। सर्वेष्टसिद्ध्यर्थे अथवा सर्वारिष्टाल्पमृत्युनाशार्थे जपे विनियोगः।

-यों कहकर हाथ का जल पृथ्वी पर छोड़ दें।

ऋष्यादि न्यास

ॐ कहोलऋषये नमः शिरसि। ॐ देवीगायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीमृत्युञ्जयदेवतायै नमः हृदये। ॐ जूँ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ सः शक्तये नमः पादयोः। ॐ ॐ कीलकाय नमः सर्वांगे।

उपर्युक्त मन्त्रों के अनुसार तत्-तत् अंगों में ऋष्यादि न्यास करें। तत्पश्चात् निम्न मन्त्रों से पहले अँगूठे आदि का स्पर्श करते हुए करन्यास करें।

करन्यास का मन्त्र

ॐ सां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ सीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ सूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

---

* अनुष्ठानप्रकाशः में न तो विनियोग वाक्य में और न ही ऋषयादिन्यास में कीलक का उल्लेख है।

करन्यास के बाद अंगन्यास इस प्रकार मन्त्र बोलते हुए करें -

हृदयादिन्यास का मन्त्र

ॐ सां हृदयाय नमः। ॐ सीं शिरसे स्वाहा। ॐ सूं शिखायै वषट्। ॐ सैं कवचाय हुम्। ॐ सौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ सः अस्त्राय फट्।

हृदयादिन्यास के बाद इष्ट देवता का निम्नलिखित ध्यान करें -

ध्यान का मन्त्र

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितम्
मुद्रापाशमृगाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्।
कोटीरेन्दुगलत् सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलम्
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावयेत्।।

ध्यान के पश्चात् इष्ट देवता की पंचोपचार या षोडशोपचार अथवा मानसोपचार से पूजा कर संस्कारित माला के द्वारा मालाविधि[1] के पालनपूर्वक उपर्युक्त मंत्र का पुरश्चरण के लिये तीन लाख जप करें। जप के बाद माला को गुप्त स्थान पर रख देना चाहिये। जप के अनन्तर दशांश दुग्ध, घी तथा अमृतखण्ड आदि से हवन करके उसके दशांश तर्पण[2], तर्पण के दशांश मार्जन[3] तथा मार्जन के दशांश ब्राह्मणभोजन करावे। मन्त्र जप करनेवाला सुधाखण्ड एवं दूध से 12 हजार हवन करे। इस मन्त्र का प्रयोग करनेवालों को अलग-अलग दिनों में अलग-अलग वस्तुओं से हवन करना चाहिये। सात दिनों के अनुसार 7 हवनीय पदार्थ इस प्रकार हैं-सुधा, वट, तिल, दूर्वा, दूध, घी तथा दूध।

सुधावटौ तिला दूर्वा पयः सर्पिः पयो हविः।
इत्युक्तैः सप्तभिर्द्रव्यैर्जुहुयात्सप्तवासरम्।। (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 129)

तर्पण तथा मार्जन आदि के बाद इष्ट की प्रार्थना कर जप को भावना के द्वारा देवता के दाहिने हाथ में अर्पण कर दें। अपमृत्यु के निवारण, आयु एवं आरोग्य को बढ़ाने हेतु सुधावल्ली (गूडूची), बकुल एवं काश्मरी (गंभारी) की समिधाओं से होम करना चाहिये। खीर आदि सिद्धान्न के होम से बड़े ज्वरों का विनाश होता है।

(यह लेख मुख्यतः चतुर्थी लाल शर्मा द्वारा लिखित 'अनुष्ठानप्रकाशः' पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

1. मालाप्रयोग की विधि के लिये अन्य लेख देखें।
2. तर्पण के लिये '**ॐ जूँ सः जूँ ॐ मृत्युञ्जयं तर्पयामि नमः**' मन्त्र बोलें।
3. मार्जन के लिये '**ॐ जूँ सः जूँ ॐ मृत्युञ्जयं अभिसिञ्चामि**' मन्त्र बोलें।